Dr. Priti Ranjan
H.D Jain College (Ara)
B.A Part - I
paper - 1
Topic - Vaidik Sabhyata
Part - III

* पहली बार शूद्र का उल्लेख आया है।
* उत्तरवैदिक काल में ⇒ दास, दस्यु, पणी को आर्यों ने मिला किया और उन्हें शूद्र जाति में सम्मिलित कर किया।

* उत्तर वैदिक काल में अछूतों का उल्लेख नहीं किया गया। इस काल में जाति प्रथा के अलावे संयुक्त परिवार की चर्चा की गयी है। यह संयुक्त परिवार - पितृवंशीय था।

* उत्तर वैदिक काल में विवाह संबंध परिवारों के बीच संपन्न होने लगा। यही विवाह आगे चलकर 'प्रजापत्य विवाह' विवाह के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जाति में ही विवाह संभव था।

* बड़े जातियों में विवाह एक ही गोत्र में संभव नहीं था।
* गोत्र प्रथा मुख्यत: (उत्तरवैदिक काल) ब्राह्मण जाति में आया है। ब्राह्मणों के बाद क्रमश: अन्तिम दौर में क्षत्रिय आया। मौर्य काल आते-2 गोत्र प्रथा वैश्यों में लागू हुआ। शूद्र में अभी भी गोत्र प्रथा लागू नहीं हुआ था।

* ब्राह्मण + क्षत्रिय + वैश्य इन तीनों को उपनयन संस्कार के नाम से जाना गया। (उत्तर वैदिक काल) शूद्र को उपनयन संस्कार से बाहर रखा गया।

* ब्राह्मण + क्षत्रिय + वैश्य को (उत्तर वैदिक काल) द्विज कहते थे।
द्विज का अर्थ = दो बार जन्म हुआ।

* जाति विवाह के अलावे अंतरजातियों विवाह का उल्लेख आया है ⇒ अनुलोम विवाह
जिसमें उच्च जाति के पुरुष और निम्न वर्ग की महिला के बीच शादी सम्पन्न होता था।
प्रतिलोम विवाह ⇒ उच्च जाति की महिला और निम्न जाति के पुरुष के बीच शादी सम्पन्न होता
* इन दोनों प्रकार की विवाह को मान्यता प्राप्त नहीं दी गई।
* अनुलोम और प्रतिलोम विवाह से उत्पन्न संतानों को शूद्र

श्रेणी में रखा गया।
* उत्तर वैदिक काल के बाद अछूत प्रथा की परम्परा की शुरुवात हुए।
* प्रतिलोम विवाह से उत्पन्न संतान को पूर्व वैदिक काल में अछूत में डाल दिया गया।

* उत्तर वैदिक काल में महिलाओं की अवस्था ऋग्वेद के अलावे कमजोर हो गई।

* ब्रम्हवादिनी को (जो शिक्षा प्राप्त करने के लिए ही आजीवन भर विवाह नहीं करती थी)
सद्योवधु ⟹ (जो विवाह होने से पहले पढ़ती थी, और बाद में विवाह के बाद पारवारिक जीवन बताने लगती थी) *इनका महत्व इनके अलावे ज्यादा था।

* बाल विवाह का शुरुवात उत्तर वैदिक काल में हुआ।
सती प्रथा का उल्लेख उत्तर वैदिक काल में हुआ।

* विधवाओं पर विभिन्न प्रकार के प्रतिबन्ध लगाये गये, जैसे ⟹ विधवा पुनः विवाह बन्द हो गया।
~~त्योहारों~~ त्यौहारों पर शामिल नहीं करने की बात कही गयी। उसके समीप शिक्षा प्राप्त करना दण्डनीय माना गया।

* नियोग प्रथा को भी बुरा माना गया।

वैदिक कालिन धार्मिक जीवन :-

ऋग्वेद काल में बहुदेव वाद की व्याख्या है, हलाँकि किंही -2 एकेश्वर वाद की चर्चा आयी है।
* ऋग्वेद काल में 33 देवी-देवताओं का आराधन की चर्चा की गई कुल मिलाकर 3,000 से भी ज्यादा था।

* सबसे प्रमुख देवता इन्द्र को माना गया। इन्द्र को पुरन्दर भी कहा गया। इन्द्र को वर्षा के देवता के रूप में उपासन

v.v.q

ऋग्वैदिक काल में इन्द्र ने जितनी भी लड़ाईयाँ लड़ाइयाँ लड़ी किसी में पराजय नहीं हुई।

* ऋग्वेद के 8th मंडल में भयानक युद्ध की चर्चा है, जो कृष्ण असुर संग्राम युद्ध से प्रसिद्ध हुआ। (कृष्ण और इन्द्र की लड़ाईयों का वर्णन है)

* कृष्ण के बारे में => अंशुमती नदी के किनारे (यमुना) कृष्ण नाम के असुर थे।

* इन्द्र पर 250 सूक्त इन्द्र पर समर्पित है, इन्द्र के लिए सोमपा नाम का प्रयोग किया गया। क्योंकि वे सोम रस (नशीला पेय पदार्थ) को पीकर इन्द्र लड़ाइयों लड़ता था।

* इन्द्र का वाहन = घोड़ा (सफेद अश्व पर)
इन्द्र का शास्त्र - वज्र

* इन्द्र के बाद दूसरे महत्वपूर्ण देवता वरुण को माना गया, वरुण पर कुल मिलाकर 44 सूक्त है। वरुण को इन्द्र के समान ही शक्तिशाली 7th मंडल में दिखाया गया है।

* वरुण को आचारण तथा ऋतु का देवता माना गया है, बाद में वरुण जल के देवता के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

* ऋतुगोप (वरुण का नाम)
वरुण का प्रभाव कालान्तर में बहुत कमजोर हो गया। ऋग्वेद के 9th मंडल में वरुण को असुर कहा गया।

* कुल मिलाकर ऋग्वेद में दूसरे स्थान में अग्नि को रखा गया। अग्नि पर कुल मिलाकर 200 सूक्त।

* ऋग्वेद के अधिकांश शुरुवात अग्नि के नाम किया गया

(पवित्र देवता के रूप में अग्नि)
* अग्नि को वाहन के रूप में घोड़ा को बताया गया।
(3 सींग वाले घोड़ा)

इन्द्र
↓
अग्नि
↓
वरुण
↓
सोम

* सोम पर 114 सुक्त की चर्चा है, ऋग्वेद के 9वें मंडल के सोम देवता के नाम समर्पित है।

* ऋग्वेद में सोम शब्द वस्तुतः एक प्रकार की वनस्पति के लिए जो मुजवन्त हिन्दुकुश क्षेत्र में पाया जाता था।

* बाद में सोम को शिव कहा गया।
* चार देवताओं के अलावे विष्णु, तथा रुद्र की चर्चा ऋग्वेद में विशेष रूप से की गयी है। (रुद्र → क्रोध देवता के रूप में (शिव)) वैसे ऋग्वेद में तीन ही बार आया है। रुद्र यहाँ के स्थानीय लोगों के देवता थे। जिन्हें आर्यों ने अपने देव समूह में शामिल कर लिया।

* सूर्य पूजा का विवरण ऋग्वेद में मिलता है, सूर्य के 11 रूपों में उपासना किया गया, इसमें सबसे प्रसिद्ध सवितृ था सविता को कहा गया है, इसके लिए गायत्री मंत्र को सामर्पित किया गया है।

* ऋग्वेद में बहुत जगहों पर विष्णु को सूर्य का रूप माना गया है।

* देवी ⇒ ऋग्वेद के दूसरे मंडल में देवी का उल्लेख है। सरस्वती, इला, उषा, पृथ्वी, तथा अरण्यानी (वन देवी) तथा अदिति (सभी देवताओं की माता, सूर्य की माता के लिए विशेष रूप से माना जाता है)

- ऋग्वेद में यज्ञ और बलि प्रथा का सीमित उल्लेख है।

* ऋग्वैदिक आर्यों सब मृतकों को जलाया करते थे। इनका धार्मिक जीवन एकदम सरल था। इस काल में भी स्वर्ग एवं नरक की धारणा है।
* मृणमय गृह = नरक

* उत्तरवैदिक काल में स्थायी जीवन की शुरुवात होने के कारण सामाजिक / धार्मिक जीवन मे बहुत परिवर्तन आये।

* धीरे-2 आर्यों सब यहाँ के स्थानीय लोगों के साथ रहने लगे।
* उत्तरवैदिक काल में सबसे प्रमुख देवता के रूप में (प्रजापति / ब्रह्मा / आदि पुरुष) फिर धीरे-2 तीन देव (त्रिदेव) को एक समान महत्व प्रदान किया गया।
* ब्रह्मा को सृष्टि के जनक के रूप में दिखाया गया है। ब्रह्मा के विभिन्न अंगों से जाति एवं देवताओं का जन्म हुआ।
* ब्रह्मा के मुख से अग्नि, नेत्र से सूर्य, मन से चन्द्रमा (इन सब का ऋग्वेद के दशवें मंडल में चर्चा है)

* ब्रह्मा का निवास स्थान => ब्रह्मा लोक
विष्णु सृष्टि का संचालक माना गया,
रुद्र को (महेश + शिव + शंकर) संहारक के रूप में दिखाया गया है।

* ऋग्वैदिक देवताओं का नाम भी उत्तर वैदिक काल में रहा, उत्तरवैदिक काल में पुरानी देवी के साथ-2 दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती तीनों को जोड़ दिया,

* पहली बार जोड़ी की पूजा के रूप में प्रमाण (उत्तर वैदिक काल में मिला है)

* इस काल में बड़े-2 यज्ञ प्रारम्भ हुआ और बड़ी संख्या में पशुबलि की चर्चा है। 21 गाय या 11 कम से कम लगभग 5,00-600 बैल (नंदि बैल छोड़कर) हजारों बकरी, भेड़ अन्य पशु की

बलि दी जाती थी। बड़ी मात्रा में बलि पर जोर दिया गया।

-* उत्तर वैदिक काल का प्रथम चरण → 1,000 BC - 800 BC
इस दौर में वैदिक धर्म के कई अलग-2 व्याख्या आयी। इसमें ब्रम्हण धर्म सबसे शक्तिशाली होकर उभरा।

-* चार प्रकार के मुख्य पुरोहित :←

होता ⇒ ऋग्वेद के ज्ञाता होते थे।
उद्गाता ⇒ सामवेद के " " "
अध्वर्यु ⇒ यजुर्वेद के " " "
ब्रम्हण (ब्रह्मा) ⇒ अथर्ववेद के ज्ञाता थे।

* धीरे-2 चारों पुरोहितों में ब्राम्हणों ने सबसे ज्यादा ख्याती प्राप्त की और तीनों पुरोहितों को पीछे छोड़ दिया। और वैदिक धर्म की नये ढंग से व्याख्या ब्राम्हणों ने करने लगे।

* ब्रम्हणों ने जो सामाजिक कानून बनाये उन्हें धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक दर्शन इन सब को ब्रम्हण वाद कहा जाता है।

* क्षत्रियों ने सबसे ज्यादा महत्व ब्रम्हणों को दिया। ब्रम्हण वाद में दो मुख्य बुराईयां जिसके खिलाफ आंदोलन तब भी चले। प्रथम ⇒ जाति प्रथा पर अनिवार्य रूप से बल दिया गया।
* पशु बलि प्रथा।

* इन सब का विरोध उपनिषद् दर्शन में किया गया। लेकिन लेकिन ब्रम्हण पुरोहित भी दो प्रकार से उभरे।
i) रूढ़िवादी ⇒ जो यज्ञ तथा बलि पर बल देते थे।
ii) उदारवादी ⇒ इन दोनों की अनिवार्यता समाप्त करने की बात कही।